EarthCanvas: Journal of Earth, Space and Society JESS Vol. 1, Issue 1 Mar 2026
E-ISSN: 3139-1850

मिर्जापुर जनपद में भू-आकृतियों का कृषि भूमि उपयोग एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रभावः एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ रजनीश कुमार [1*] नाहिद खान[2]

[1] असिस्टेंट प्रोफेसर भूगोल विभाग सी एस एन पी जी कॉलेज, हरदोई, उत्तर प्रदेश

[2] शोधार्थिनी नाहिद खान भूगोल विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

प्राप्त: 1 फरवरी 2026
स्वीकार: 28 फरवरी 2026
विधा: भूगोल

संप्रेषक लेखक
नाहिद खान
nahidkhanrob@gmail.com

शोधपत्र का उद्धरण
कुमार, रजनीश एवं नाहिद खान (2025). मिर्जापुर जनपद में भू-आकृतियों का कृषि भूमि उपयोग एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रभावः एक भौगोलिक अध्ययन, JESS, 1(2),

सारांश

मिर्जापुर जनपद उत्तर प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र है, जहाँ विविध प्रकार की भू-आकृतियाँ जैसे पठारी क्षेत्र, पहाड़ियाँ, घाटियाँ, नदी तटीय मैदान तथा जलोढ़ मैदान विद्यमान हैं। इन भू-आकृतियों का कृषि भूमि उपयोग, फसल प्रतिरूप, सिंचाई व्यवस्था तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य मिर्जापुर जनपद की प्रमुख भू-आकृतियों का विश्लेषण करते हुए उनके कृषि भूमि उपयोग एवं ग्रामीण आर्थिक गतिविधियों पर पड़ने वाले प्रभावों का भौगोलिक मूल्यांकन करना है। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि मिर्जापुर के उत्तरी एवं नदी तटीय मैदानी क्षेत्रों में समतल भूमि, उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी तथा सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता के कारण कृषि भूमि उपयोग की तीव्रता अधिक है। इन क्षेत्रों में धान, गेहूँ, दलहन एवं तिलहन फसलों का उत्पादन अपेक्षाकृत अधिक होता है। मैदानी क्षेत्रों में कृषि आधारित आय के अवसर अधिक होने के कारण ग्रामीणों का जीवन स्तर अपेक्षाकृत बेहतर है, जबकि पठारी क्षेत्रों में कृषि की सीमाओं के कारण पशुपालन, वानिकी, पत्थर खनन तथा अन्य गैर-कृषि गतिविधियों पर निर्भरता अधिक देखी गई। जनपद के अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के सीमित अवसरों के कारण श्रमिकों का पलायन भी एक प्रमुख समस्या के रूप में सामने आया है।

शब्द कुंजी: मिर्जापुर जनपद, भू-आकृतियाँ, कृषि भूमि उपयोग, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, भूमि उपयोग प्रतिरूप, कृषि उत्पादकता, ग्रामीण विकास, भौगोलिक अध्ययन।

1. भूमिका

भूगोल में भू-आकृतियाँ पृथ्वी की सतह पर विद्यमान प्राकृतिक स्वरूपों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिनका किसी क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों, भूमि उपयोग, कृषि विकास तथा सामाजिक-आर्थिक संरचना पर गहरा प्रभाव पड़ता है। किसी भी क्षेत्र की कृषि व्यवस्था केवल जलवायु, मिट्टी और जल संसाधनों पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि वहाँ की स्थलाकृति अथवा भू-आकृतियाँ भी कृषि भूमि उपयोग की प्रकृति एवं

उत्पादकता को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। समतल मैदानों में जहाँ कृषि गतिविधियों का विस्तार सरलता से किया जा सकता है, वहीं पहाड़ी एवं पठारी क्षेत्रों में कृषि अनेक प्राकृतिक बाधाओं से प्रभावित होती है। इस प्रकार भू-आकृतियाँ भूमि उपयोग प्रतिरूप तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था के स्वरूप को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं।

मिर्जापुर जनपद उत्तर प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र है, जो अपनी विविध स्थलाकृतिक विशेषताओं के लिए जाना जाता है। यह जनपद गंगा नदी के मैदानी क्षेत्र तथा विंध्य पर्वतमाला के पठारी एवं पहाड़ी क्षेत्रों के मध्य स्थित होने के कारण भू-आकृतिक विविधता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। यहाँ उत्तर में गंगा नदी का उपजाऊ जलोढ़ मैदान तथा दक्षिण में विंध्यन पठार एवं पहाड़ियाँ विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त अनेक छोटी-बड़ी नदियाँ, जलप्रपात, घाटियाँ तथा वन क्षेत्र इस क्षेत्र की भौगोलिक संरचना को विशिष्ट बनाते हैं। इन विविध भू-आकृतियों का प्रभाव कृषि भूमि उपयोग, फसल उत्पादन, सिंचाई व्यवस्था तथा ग्रामीण आजीविका के विभिन्न पक्षों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

2. अध्ययन क्षेत्र

मिर्जापुर जनपद उत्तर प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण भौगोलिक इकाई है, जो लगभग 24°52' से 25°32' उत्तरी अक्षांश तथा 82°07' से 83°39' पूर्वी देशांतर के मध्य विस्तृत है। यह जनपद अपनी विविध भू-आकृतिक संरचना के कारण विशेष महत्व रखता है, जहाँ उत्तर में गंगा नदी द्वारा निर्मित उपजाऊ जलोढ़ मैदान तथा दक्षिण में विंध्य पर्वतमाला के पठारी एवं पहाड़ी क्षेत्र विद्यमान हैं। भूगर्भिक दृष्टि से यह क्षेत्र मुख्यतः विंध्यन शैल समूह की प्राचीन अवसादी चट्टानों से निर्मित है, जिनमें बलुआ पत्थर, चूना पत्थर तथा क्वार्टजाइट प्रमुख हैं। जनपद की जलवायु उष्णकटिबंधीय मानसूनी प्रकार की है, जिसमें ग्रीष्म ऋतु अत्यधिक गर्म तथा शीत ऋतु अपेक्षाकृत शीतल होती है, जबकि अधिकांश वर्षा दक्षिण-पश्चिम मानसून से प्राप्त होती है। गंगा, बेलन तथा ओझला जैसी नदियाँ क्षेत्र के प्रमुख अपवाह तंत्र का निर्माण करती हैं और कृषि तथा जल संसाधनों की दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यहाँ जलोढ़, दोमट तथा लाल मिट्टियाँ पाई जाती हैं, जो विभिन्न प्रकार की कृषि गतिविधियों के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करती हैं। जनपद की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि आधारित है, जहाँ धान, गेहूँ, दलहन एवं तिलहन प्रमुख फसलें हैं, जबकि वन क्षेत्रों में वानिकी तथा पठारी क्षेत्रों में खनन गतिविधियाँ भी ग्रामीण आजीविका का महत्वपूर्ण आधार हैं।

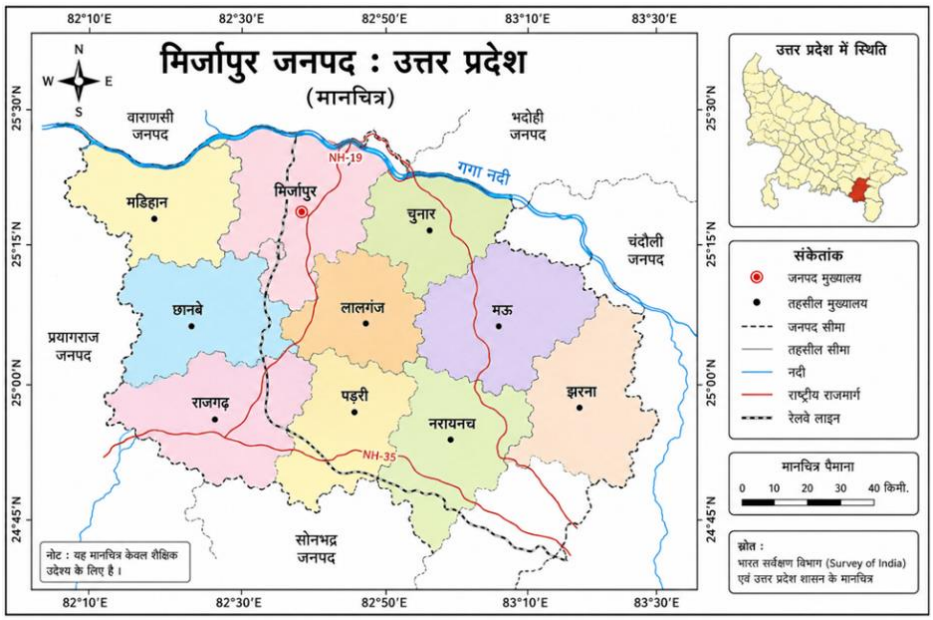

सारणी 1 : मिर्जापुर जनपद का सामान्य भूमि उपयोग प्रतिरूप (प्रतिशत में)

क्र. सं.	भूमि उपयोग की श्रेणी	2016-17	2017-18	2018-19	2020-21	2022-23
1.	वन	24.16	24.19	26.87	30.81	31.89
2.	कृषि योग्य बंजर भूमि	2.32	2.19	2.19	2.21	2.11
3.	वर्तमान परती भूमि	6.26	5.79	4.56	3.08	0.28
4.	अन्य परती भूमि	3.04	3.10	2.60	2.34	3.76
5.	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	1.80	1.79	1.79	1.79	2.31
6.	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग में लाई गई भूमि	12.71	12.80	12.82	10.38	11.11
7.	चारागाह	0.11	0.10	0.10	0.10	0.10
8.	उद्यान, वृक्ष एवं झाड़ियाँ	3.43	3.43	2.45	2.41	2.47

स्रोत: जिला सांख्यिकी पत्रिका

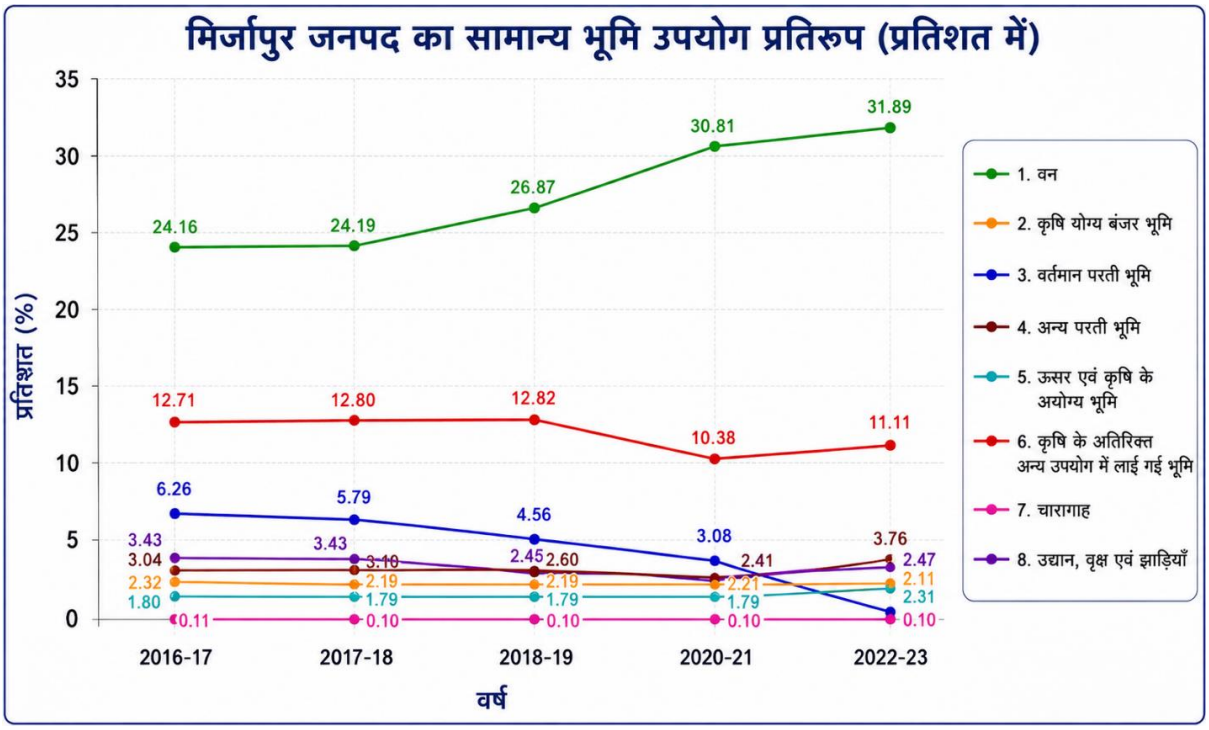

आरेख क्र. 01: भूमि उपयोग प्रतिरूप

मिर्जापुर जनपद के भूमि उपयोग प्रतिरूप का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि जनपद की भौगोलिक संरचना, विशेषकर विंध्यन पठारी क्षेत्र, वनाच्छादित भू-भाग तथा सीमित कृषि योग्य भूमि, भूमि उपयोग के स्वरूप को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। वर्ष 2016-17 से 2022-23 की अवधि के

आंकड़ों का विश्लेषण करने पर भूमि उपयोग की विभिन्न श्रेणियों में महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। सर्वप्रथम वन क्षेत्र पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि वर्ष 2016-17 में वन क्षेत्र 24.16 प्रतिशत था, जो 2017-18 में 24.19 प्रतिशत तथा 2018-19 में बढ़कर 26.87 प्रतिशत हो गया। इसके बाद वर्ष 2020-21 में वन क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई और यह 30.81 प्रतिशत तक पहुँच गया। वर्ष 2021-22 तथा 2022-23 में वन क्षेत्र 31.89 प्रतिशत बना रहा। यह वृद्धि जनपद में वन संरक्षण कार्यक्रमों, सामाजिक वानिकी योजनाओं तथा वन क्षेत्र के पुनर्वर्गीकरण का परिणाम मानी जा सकती है। इससे स्पष्ट होता है कि मिर्जापुर जनपद में वन भूमि का महत्व निरंतर बढ़ा है और यह भूमि उपयोग की सबसे प्रमुख श्रेणी के रूप में उभरी है।

कृषि योग्य बंजर भूमि की स्थिति का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि वर्ष 2016-17 में इसका प्रतिशत 2.32 था, जो 2017-18 एवं 2018-19 में क्रमशः 2.19 प्रतिशत रहा। वर्ष 2020-21 में यह 2.21 प्रतिशत था, जबकि 2021-22 में घटकर 1.58 प्रतिशत हो गया। वर्ष 2022-23 में इसमें पुनः कुछ वृद्धि हुई और यह 2.11 प्रतिशत दर्ज किया गया। इस प्रवृत्ति से स्पष्ट होता है कि जनपद में कृषि योग्य बंजर भूमि के विकास एवं सुधार के प्रयास किए गए हैं, जिसके परिणामस्वरूप इस श्रेणी का क्षेत्रफल अपेक्षाकृत नियंत्रित रहा है।

वर्तमान परती भूमि के आंकड़े कृषि गतिविधियों की तीव्रता और भूमि उपयोग दक्षता को प्रदर्शित करते हैं। वर्ष 2016-17 में वर्तमान परती भूमि 6.26 प्रतिशत थी, जो 2017-18 में घटकर 5.79 प्रतिशत तथा 2018-19 में 4.56 प्रतिशत रह गई। वर्ष 2020-21 में यह और घटकर 3.08 प्रतिशत हो गई। वर्ष 2021-22 एवं 2022-23 में वर्तमान परती भूमि केवल 0.28 प्रतिशत रह गई, जो एक अत्यंत सकारात्मक परिवर्तन का संकेत है। इससे स्पष्ट होता है कि कृषि योग्य भूमि का उपयोग अधिक प्रभावी ढंग से किया जाने लगा है तथा किसानों द्वारा भूमि को परती छोड़ने की प्रवृत्ति में कमी आई है। अन्य परती भूमि के प्रतिशत में उतार-चढ़ाव देखा गया है। वर्ष 2016-17 में इसका प्रतिशत 3.04 था, जो 2017-18 में 3.10 प्रतिशत तथा 2018-19 में 2.60 प्रतिशत रहा। वर्ष 2020-21 में यह 2.34 प्रतिशत तक घट गया, किन्तु 2021-22 एवं 2022-23 में बढ़कर 3.76 प्रतिशत हो गया। यह वृद्धि भूमि उपयोग में परिवर्तन, जल उपलब्धता की समस्या अथवा कृषि निवेश में कमी जैसी परिस्थितियों का परिणाम हो सकती है। ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि की स्थिति अपेक्षाकृत स्थिर रही है। वर्ष 2016-17 में इसका प्रतिशत 1.80 था, जो 2017-18 एवं 2018-19 में लगभग समान स्तर पर रहा। वर्ष 2021-22 एवं 2022-23 में यह 2.31 प्रतिशत दर्ज किया गया। यद्यपि इसमें कुछ वृद्धि दिखाई देती है, फिर भी इसका कुल क्षेत्रफल जनपद के कुल क्षेत्रफल की तुलना में सीमित है। यह संकेत करता है कि भूमि सुधार कार्यक्रमों के बावजूद कुछ क्षेत्र अभी भी कृषि उपयोग के लिए अनुपयुक्त बने हुए हैं। कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग में लाई गई भूमि का प्रतिशत इस अवधि में महत्वपूर्ण रहा है। वर्ष 2016-17 में यह 12.71 प्रतिशत था, जो 2017-18 में 12.80 प्रतिशत तथा 2018-19 में 12.82 प्रतिशत हो गया। वर्ष 2020-21 में यह घटकर 10.38 प्रतिशत हुआ, किन्तु 2021-22 एवं 2022-23 में पुनः बढ़कर 11.11 प्रतिशत हो गया। इस श्रेणी में आवासीय क्षेत्र, सड़कें, औद्योगिक उपयोग, सार्वजनिक संस्थान तथा अन्य गैर-कृषि गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं। इसका बढ़ता प्रतिशत जनपद में नगरीकरण, अवसंरचनात्मक विकास तथा आर्थिक गतिविधियों के विस्तार को दर्शाता है।चारागाह भूमि का प्रतिशत अध्ययन अवधि के दौरान अत्यंत कम पाया गया। वर्ष 2016-17 में यह 0.11 प्रतिशत था, जबकि 2017-18 से 2022-23 तक लगभग 0.10 प्रतिशत बना रहा। चारागाह भूमि का इतना कम प्रतिशत यह दर्शाता है कि जनपद में पशुपालन के लिए समर्पित चराई भूमि का अभाव है। भविष्य में

पशुधन विकास के लिए इस श्रेणी की भूमि में वृद्धि की आवश्यकता महसूस की जाती है। उद्यान, वृक्ष एवं झाड़ियों के अंतर्गत आने वाली भूमि में भी परिवर्तन देखा गया। वर्ष 2016-17 एवं 2017-18 में इसका प्रतिशत 3.43 था, जबकि 2018-19 में घटकर 2.45 प्रतिशत रह गया। वर्ष 2020-21 में यह 2.41 प्रतिशत तथा 2021-22 में 2.39 प्रतिशत रहा। वर्ष 2022-23 में इसमें हल्की वृद्धि दर्ज की गई और यह 2.47 प्रतिशत हो गया। यह श्रेणी बागवानी, फलोत्पादन तथा वृक्षारोपण गतिविधियों का प्रतिनिधित्व करती है। इसके आंकड़े संकेत करते हैं कि जनपद में बागवानी गतिविधियाँ सीमित स्तर पर विकसित हुई हैं।

सारणी 2 : मिर्जापुर जनपद में भू-आकृतियों का कृषि भूमि उपयोग एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

क्र. सं.	भू-आकृति	प्रमुख विशेषताएँ	कृषि भूमि उपयोग	प्रमुख फसलें	ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रभाव
1	**गंगा का जलोढ़ मैदान**	समतल स्थलाकृति, उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी, पर्याप्त जल उपलब्धता	कृषि भूमि का सर्वाधिक उपयोग, बहुफसली कृषि	धान, गेहूँ, गन्ना, दलहन, तिलहन	कृषि आय अधिक, रोजगार के अवसर अधिक, जीवन स्तर अपेक्षाकृत उच्च
2	**नदी तटीय क्षेत्र**	नदियों के निकट उपजाऊ भूमि, सिंचाई की सुविधा	सघन कृषि एवं सब्जी उत्पादन	सब्जियाँ, धान, गेहूँ, मसाले	नकदी आय में वृद्धि, स्थानीय बाजारों का विकास
3	**विंध्यन पठारी क्षेत्र**	पथरीली एवं ऊबड़-खाबड़ भूमि, कम उर्वरता	सीमित कृषि, वर्षा आधारित खेती	ज्वार, बाजरा, अरहर, चना	कृषि आय कम, मजदूरी एवं पशुपालन पर निर्भरता
4	**पहाड़ी क्षेत्र**	अधिक ढाल, मृदा अपरदन की समस्या	कृषि योग्य भूमि कम, परती भूमि अधिक	मोटे अनाज, दलहन	सीमित कृषि उत्पादन, पलायन की प्रवृत्ति अधिक
5	**घाटी क्षेत्र**	अपेक्षाकृत समतल एवं जल संचयन की सुविधा	मिश्रित कृषि एवं बागवानी	सब्जियाँ, फल, दलहन	अतिरिक्त आय के स्रोत, स्थानीय रोजगार में वृद्धि
6	**वनाच्छादित क्षेत्र**	घने वन, प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता	कृषि सीमित, वन आधारित गतिविधियाँ प्रमुख	लघु वनोपज आधारित उत्पादन	ईंधन, चारा, महुआ, तेंदूपत्ता आदि से आय

7	**ऊसर एवं बंजर क्षेत्र**	कम उर्वरता, जल की कमी	कृषि उपयोग सीमित	अल्प उत्पादक फसलें	आर्थिक विकास में बाधा, भूमि सुधार की आवश्यकता
8	**खनिज एवं पथरीले क्षेत्र**	बलुआ पत्थर एवं खनिज संसाधनों की उपलब्धता	कृषि भूमि सीमित	सीमित खेती	खनन एवं पत्थर उद्योग से रोजगार एवं आय

3. भू-आकृतियों का कृषि भूमि उपयोग एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

मिर्जापुर जनपद उत्तर प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र है, जहाँ भू-आकृतियों की पर्याप्त विविधता पाई जाती है। जनपद का उत्तरी भाग गंगा नदी के जलोढ़ मैदानों से निर्मित है, जबकि दक्षिणी एवं दक्षिण-पश्चिमी भाग विंध्यन पठार, पहाड़ियों तथा घाटियों से आच्छादित है। इसी कारण यहाँ भूमि उपयोग, कृषि प्रणाली, फसल प्रतिरूप, सिंचाई व्यवस्था तथा ग्रामीण आर्थिक गतिविधियों में क्षेत्रीय भिन्नताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। किसी भी क्षेत्र की भू-आकृतियाँ केवल प्राकृतिक स्वरूप का प्रतिनिधित्व नहीं करतीं, बल्कि वे मानव जीवन, कृषि उत्पादन और आर्थिक विकास की दिशा को भी निर्धारित करती हैं। मिर्जापुर जनपद इसका उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है, जहाँ भू-आकृतिक संरचना कृषि भूमि उपयोग और ग्रामीण अर्थव्यवस्था दोनों को गहराई से प्रभावित करती है।

मिर्जापुर के उत्तरी मैदानी भाग में गंगा तथा उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित उपजाऊ जलोढ़ मैदान पाए जाते हैं। इन क्षेत्रों की भूमि समतल, उपजाऊ तथा सिंचाई सुविधाओं से युक्त होने के कारण कृषि के लिए अत्यंत अनुकूल है। यहाँ धान, गेहूँ, गन्ना, दलहन एवं तिलहन जैसी फसलों का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जाता है। समतल भूमि होने के कारण कृषि यंत्रीकरण भी अपेक्षाकृत अधिक विकसित है, जिससे उत्पादन लागत कम तथा उत्पादकता अधिक होती है। इन क्षेत्रों में कृषि भूमि उपयोग की तीव्रता अधिक है और एक वर्ष में दो या तीन फसलें उगाई जाती हैं। फलस्वरूप किसानों की आय अपेक्षाकृत अधिक होती है तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि आधारित गतिविधियों के माध्यम से सुदृढ़ बनी रहती है।

इसके विपरीत जनपद के दक्षिणी एवं दक्षिण-पश्चिमी भागों में विंध्यन पठार तथा पहाड़ी भू-आकृतियाँ प्रमुख हैं। इन क्षेत्रों में भूमि ऊबड़-खाबड़, ढालदार तथा पथरीली है, जिसके कारण कृषि कार्य कठिन हो जाता है। मिट्टी की गहराई कम होने तथा मृदा अपरदन की समस्या के कारण कृषि उत्पादकता निम्न स्तर पर पाई जाती है। यहाँ सिंचाई के साधन सीमित हैं और कृषि मुख्यतः मानसूनी वर्षा पर निर्भर करती है। वर्षा में अनिश्चितता होने पर कृषि उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। फलस्वरूप इन क्षेत्रों में कृषि भूमि उपयोग की तीव्रता कम है तथा कई स्थानों पर भूमि परती छोड़ दी जाती है। यह स्थिति ग्रामीण आय को प्रभावित करती है और किसानों की आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर बनी रहती है। भू-आकृतियों का प्रभाव भूमि उपयोग प्रतिरूप पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। मैदानी क्षेत्रों में अधिकांश भूमि कृषि के अंतर्गत उपयोग की जाती है, जबकि पठारी एवं पहाड़ी क्षेत्रों में वन, झाड़ियाँ तथा अनुपयोगी भूमि का प्रतिशत अधिक पाया जाता है। मिर्जापुर जनपद में वन क्षेत्र का विस्तार मुख्यतः विंध्यन पहाड़ियों एवं पठारी भागों में है। ये वन क्षेत्र स्थानीय ग्रामीणों को ईंधन, चारा, लकड़ी तथा लघु वनोपज उपलब्ध कराते हैं। महुआ, तेंदू, खैर, पलाश तथा अन्य वनोपज ग्रामीण अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त आय के स्रोत के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार वन क्षेत्र न केवल पर्यावरणीय

संतुलन बनाए रखते हैं, बल्कि ग्रामीण आजीविका को भी समर्थन प्रदान करते हैं।

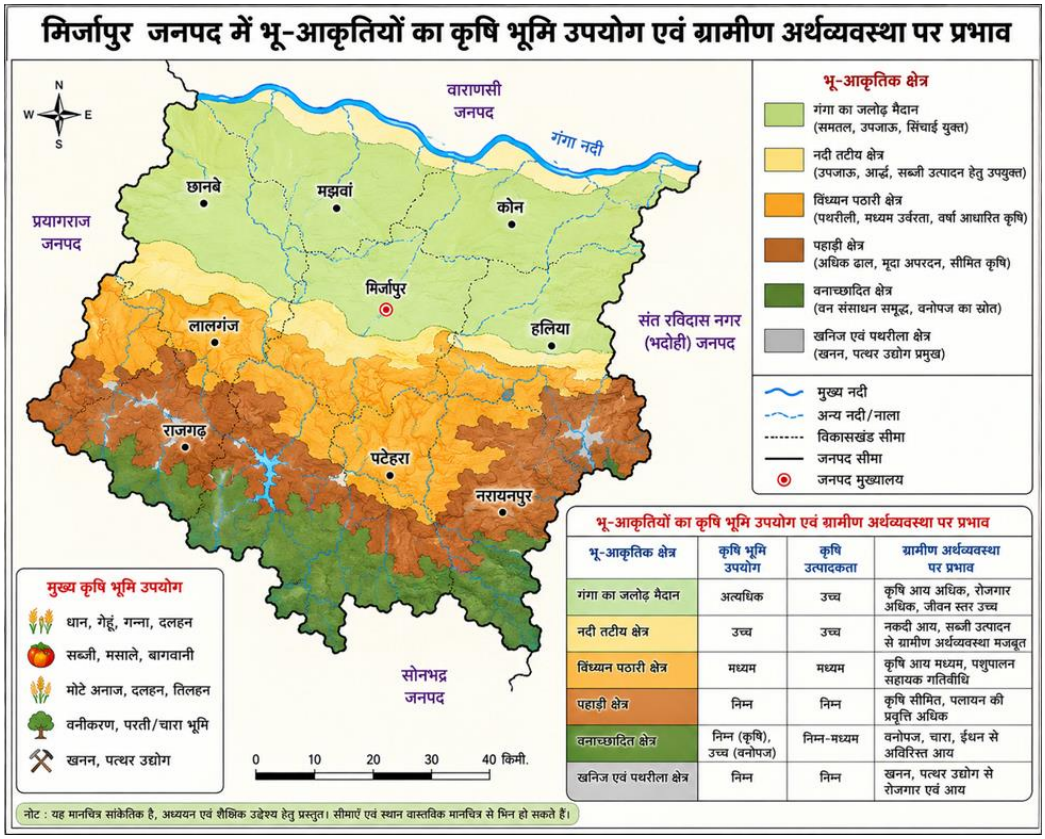

मिर्जापुर की भू-आकृतियाँ जल संसाधनों के वितरण को भी प्रभावित करती हैं। मैदानी क्षेत्रों में भूजल स्तर अपेक्षाकृत उथला होने तथा नदियों एवं नहरों की उपलब्धता के कारण सिंचाई सुविधाएँ बेहतर हैं। इसके विपरीत पठारी क्षेत्रों में जल का बहाव तीव्र होने से वर्षा जल का संचयन कम हो पाता है, जिससे जल संकट की स्थिति उत्पन्न होती है। जल की कमी कृषि उत्पादन को सीमित करती है तथा किसानों को कम लाभकारी फसलों की खेती करने के लिए विवश करती है। वर्तमान समय में जल संरक्षण संरचनाओं, तालाबों, चेक डैमों तथा वर्षा जल संचयन तकनीकों के विकास की आवश्यकता विशेष रूप से महसूस की जा रही है।

भू-आकृतियों का प्रभाव फसल प्रतिरूप पर भी पड़ता है। मैदानी क्षेत्रों में धान-गेहूँ आधारित कृषि प्रणाली प्रमुख है, जबकि पठारी क्षेत्रों में मोटे अनाज, दलहन तथा तिलहन की खेती अधिक की जाती है। हाल के वर्षों में कुछ क्षेत्रों में बागवानी एवं फलोत्पादन को भी बढ़ावा मिला है। आम, अमरूद तथा अन्य फलों की खेती ग्रामीण आय में वृद्धि का माध्यम बन रही है। इसके अतिरिक्त सब्जी उत्पादन और पशुपालन भी ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पूरक क्षेत्र के रूप में विकसित हो रहे हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर भू-आकृतियों का प्रभाव रोजगार के अवसरों के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। मैदानी क्षेत्रों में कृषि, कृषि प्रसंस्करण तथा व्यापारिक गतिविधियों के कारण रोजगार के अवसर अपेक्षाकृत अधिक उपलब्ध हैं। दूसरी ओर, पठारी एवं पहाड़ी क्षेत्रों में कृषि की सीमाओं के कारण ग्रामीण जनसंख्या का एक बड़ा भाग वन आधारित गतिविधियों, पशुपालन, पत्थर खनन, मजदूरी तथा अन्य गैर-कृषि कार्यों पर निर्भर रहता है। मिर्जापुर में पत्थर उद्योग और खनन गतिविधियाँ विशेष रूप से विंध्यन पठारी क्षेत्रों में रोजगार का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। यद्यपि इन गतिविधियों से आय प्राप्त होती है, लेकिन पर्यावरणीय क्षरण तथा भूमि

उपयोग परिवर्तन जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न होती हैं। भू-आकृतिक विषमताओं के कारण जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक विकास का स्तर भी भिन्न-भिन्न पाया जाता है। जहाँ मैदानी क्षेत्रों में बेहतर कृषि उत्पादन, सिंचाई सुविधाओं तथा बाजारों की उपलब्धता के कारण आर्थिक विकास अपेक्षाकृत अधिक है, वहीं दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में परिवहन एवं संचार सुविधाओं की कमी विकास की गति को प्रभावित करती है। मिर्जापुर जनपद में भू-आकृतियाँ पर्यटन विकास की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। विंडहम जलप्रपात, टांडा जलप्रपात, सिरसी बाँध, विंध्याचल क्षेत्र तथा प्राकृतिक पहाड़ियाँ पर्यटन की दृष्टि से आकर्षण का केंद्र हैं। पर्यटन गतिविधियों के विकास से स्थानीय लोगों को रोजगार एवं आय के नए अवसर प्राप्त होते हैं, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल मिलता है। इस प्रकार भू-आकृतियाँ केवल कृषि ही नहीं बल्कि सेवा क्षेत्र एवं पर्यटन आधारित आर्थिक गतिविधियों को भी प्रभावित करती हैं।

4. निष्कर्ष

मिर्जापुर जनपद में गंगा के जलोढ़ मैदान, नदी तटीय क्षेत्र, विंध्यन पठार, पहाड़ी भू-भाग तथा वनाच्छादित क्षेत्र जैसी विभिन्न भू-आकृतियाँ विद्यमान हैं, जिनके कारण भूमि उपयोग प्रतिरूप, कृषि उत्पादकता तथा ग्रामीण आजीविका के स्वरूप में पर्याप्त क्षेत्रीय भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। इन क्षेत्रों में धान, गेहूँ, दलहन एवं तिलहन जैसी फसलों का उत्पादन उच्च स्तर पर पाया जाता है, जिससे किसानों की आय एवं जीवन स्तर अपेक्षाकृत बेहतर है। दूसरी ओर, दक्षिणी एवं दक्षिण-पश्चिमी भागों में स्थित विंध्यन पठारी तथा पहाड़ी क्षेत्रों में भूमि की असमानता, मृदा अपरदन, सीमित सिंचाई सुविधाएँ तथा कम उर्वर मिट्टी के कारण कृषि विकास अपेक्षाकृत कम है। भूमि उपयोग प्रतिरूप के विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि मिर्जापुर जनपद में वन क्षेत्र का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक है तथा हाल के वर्षों में इसमें वृद्धि हुई है। वन क्षेत्र न केवल पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में सहायक हैं, बल्कि ग्रामीण समुदाय को ईंधन, चारा, लकड़ी एवं लघु वनोपज उपलब्ध कराकर उनकी आय में भी योगदान देते हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के संदर्भ में अध्ययन से यह तथ्य सामने आया कि भू-आकृतिक परिस्थितियाँ रोजगार, आय, संसाधनों की उपलब्धता तथा जीवन स्तर को प्रभावित करती हैं। मैदानी क्षेत्रों में कृषि एवं उससे संबंधित गतिविधियाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार हैं, जबकि पठारी एवं पहाड़ी क्षेत्रों में कृषि की सीमाओं के कारण रोजगार के वैकल्पिक स्रोतों का महत्व बढ़ जाता है।

संदर्भ

1. सिंह, जगदीश (2018). कृषि भूगोल. प्रयागराज: किताब महल प्रकाशन, पृ. 45–67।
2. शर्मा, आर. सी. (2016). भारत का कृषि भूगोल. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ. 112–136।
3. मामोरिया, चतुर्भुज बी. एवं जैन, जे. पी. (2019). भारत का आर्थिक एवं वाणिज्यिक भूगोल. आगरा: साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, पृ. 278–305।
4. यादव, चन्द्रशेखर (2017). ग्रामीण विकास एवं कृषि परिवर्तन. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृ. 84–103।
5. उत्तर प्रदेश शासन (2023). मिर्जापुर जनपद सांख्यिकीय पत्रिका. लखनऊ: अर्थ एवं संख्या विभाग, पृ. 25–58।
6. भारत सरकार (2011). जनगणना 2011: जिला जनगणना पुस्तिका, मिर्जापुर. नई दिल्ली: भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त, पृ. 34–72।
7. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) (2021). सतत कृषि एवं भूमि संसाधन प्रबंधन. नई दिल्ली: आई.सी.ए.आर., पृ. 96–124।

8. राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग योजना ब्यूरो (NBSS&LUP) (2020). उत्तर प्रदेश की मृदा एवं भूमि उपयोग रिपोर्ट. नागपुर, पृ. 52–89।
9. हुसैन, माजिद (2020). भारत का भूगोल. नई दिल्ली: मैकग्रा हिल एजुकेशन, पृ. 215–247।
10. सिंह, गोपाल (2019). भारत का भूगोल. नई दिल्ली: आत्माराम एंड संस, पृ. 187–221।
11. उत्तर प्रदेश योजना विभाग (2022). उत्तर प्रदेश मानव विकास रिपोर्ट. लखनऊ: योजना विभाग, पृ. 141–169।
12. मिश्रा, आर. पी. (2018). ग्रामीण भूगोल एवं क्षेत्रीय विकास. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स, पृ. 132–160।
13. सिंह, बी. पी. (2017). भूमि उपयोग योजना एवं संसाधन प्रबंधन. जयपुर: पोइंटर पब्लिशर्स, पृ. 73–102।
14. भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय (2022). एग्रीकल्चरल स्टैटिस्टिक्स एट ए ग्लांस 2022. नई दिल्ली: कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, पृ. 61–94।